ब्लाउज़

मेरा ब्लाउज़
मेरे बच्चे का गुल्लक है!
कहीं से भी घूमता-टहलता हुआ
आता है
और बड़े निश्चिंत भाव से
पोस्ट कर जाता है
चकमक पत्थर, सीपी
सिगरेट की पन्नियाँ,
खिलौनों के नट-बोल्ट,
सारे अखोर-बखोर!

कभी-कभी मैं ऊबकर
उसे मारने दौड़ती हूँ -
अक्सर तो वह भाग जाता है
और अगर कभी पिट गया तो
सुकुर-सुकुर रोता-बिसुरता है
नाक-आँख
सब रगड़ देता है
ब्लाउज़ से!
बेचारे ब्लाउज़ की
नन्ही-सी जान
डरकर चिपक जाती है
मुझसे!

अनामिका

रेल चल रही

रेल चल रही हम सवार हैं
देख रहे खिड़की पर बैठे
कभी साइकिल
कभी कार है।
कोई चला रहा स्कूटर
चली आ रही फिर से मोटर।
ट्रैक्टर ट्रक भी आते-जाते
बस का चलना लगातार है।
खेत गाँव भी
खूब मिल रहे,
नीले-नीले
फूल खिल रहे।
मिलती जातीं नदियाँ नहरें।
मन में उठतीं कैसी लहरें।
आती वह बैलों की गाड़ी
दूर दीखती
एक पहाड़ी।
हवा चल रही ठण्डी-ठण्डी
कभी बह रही ज़ोरदार है।
रेल चल रही हम सवार हैं।

प्रयाग शुक्ल